जग़ में वसनि ठग़, भारी पंज भरम जा,
मोहे मारे माति खसे, सभ खे कनि डगमग,
के सुजाखा सूरिमा, रहनि ऐन अलग़,
सामी थी सर बुंग, माणिनि मौज मुकिति जी.

सामी साहब कहते हैं कि संसार में भरम/भ्रम रूपी पाँच ठग रहते हैं- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। ये पाँच विकार मनुष्यों को मोह कर, उनकी मति (समझ) मार कर, उन्हें मतिहीन कर अस्थिर बना डालते हैं। परंतु संसार में कुछ विरले मनुष्य रहते हैं जो इनसे पूरी तरह अलग होते हैं। ऐसे लोग अंतर्ज्ञान प्राप्त कर, अंतरात्मा से एकरूपता स्थापित कर, सर्वज्ञ बन कर मोक्ष- मुक्ति का परम आनंद प्राप्त करते हैं।

मनुष्य के मन में समाया हुआ अज्ञान माया है। मनुष्य का मन माया से प्रभावित होकर ही सब कुछ सोचता और करता रहता है। माया के कारण ही संसार में सभी दु:ख और चिंताएँ हैं। अज्ञान और अविद्या माया के ही नाम हैं। काम, क्रोध, लोभ आदि पाँच विकार भी माया के पास रहने वाले ठग हैं, जो जीव/मनुष्य को भ्रम में, धोखे में डालने वाले होते हैं। किसी वस्तु के सत्य स्वरूप को न समझ पाना ही भ्रम है। संत-साहित्य में उल्लेखित अज्ञान, भ्रांति, विपरीत ज्ञान आदि शब्द 'भ्रम' के ही स्वरूप को स्पष्ट करने वाले हैं। मायारूप, असत्य संसार को सत्य समझना भी एक प्रकार का भ्रम ही है। अपनी देह को ही 'मैं' समझ कर (देहोऽ हं) अभिमान करना भ्रम का मूल है। 'सोऽहं' (मैं वही आत्मा हूँ) का बोध हो जाने पर ही जीव भ्रम से छुटकारा पा लेता है।

माया आभास है, भ्रम है। वस्तुत: वह है ही नहीं। वह तो मरीचिका है, छल है। अविद्या भी आभास निर्माण कराने वाली है। वह मायावी है, असत्य है। भ्रम भी इसी के शस्त्र/हथियार हैं। संत कबीर ने माया को 'ठगिनी' कहा है। सामी साहब भी पाँच भ्रमों के 'ठग' की संज्ञान दी है। काम क्रोधादि पाँचों विकार जीव की मति भ्रष्ट कर उसे दु:ख की खाई में ढकेल देते हैं। इन पाँचों ठगों के प्रभाव से वही बच सकता है, जो अंतर्ज्ञान द्वारा जाग्रत होकर अलिप्त रहकर अंत:करण में परमात्मा से तन्मयता स्थापित करता है वही शूरवीर मनुष्य सच्चा संतोष पाता है। संत कबीर के शब्दो में-

भ्रम का ताला लगा महल रे, प्रेम की कुँजी लगाव।
कपट-किवाड़िया खोल रे, यह विधि पिय को जगाव॥

■